NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

किसान और एलोवेरा (घृतकुमारी) की खेती

अमन दीक्षित एवं रुपेश कश्यप

एलोवेरा की खेती: पिछले कुछ वर्षों में एलोवेरा की मांग तेजी से बढ़ी है कई कंपनियां इसके प्रोडक्ट बना रही हैं। अब बड़े पैमाने पर एलोवेरा की खेती भी की जा रही है लेकिन किसानों के सामने यही प्रश्न होता है कि एलोवेरा की खेती कैसे करें? इसके लिए मार्केट कहां है? तो आज इस लेख के माध्यम से एलोवेरा की खेती के बारे में आसान भाषा में समझते हैं–

इस लेख में आप जानेंगे

1– एलोवेरा की खेती पर एक नजर

2– एलोवेरा की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

3– खेती के लिए उपयोगी मिट्टी

4– खेती का सही समय

5– एलोवेरा की खेती की तैयारी कैसे करें

6– एलोवेरा की उन्नत किस्में

7– सिंचाई और उर्वरक प्रबंधन

8– रोग एवं कीट प्रबंधन कैसे करें

9– मार्केटिंग एवं लागत एवं कमाई

एलोवेरा की खेती पर एक नजर :–

एलोवेरा एक नगदी फसल है इसकी खेती भारत में लगभग सभी राज्यों में की जाती है। पतंजलि, डाबर, वैद्यनाथ, रिलायंस कई बड़ी कंपनियां किसानों से सीधे एलोवेरा की फसल खरीद लेती हैं लेकिन पल्प निकालकर बेचने पर किसानों को 4 से 5 गुना ज्यादा मुनाफा होता है।

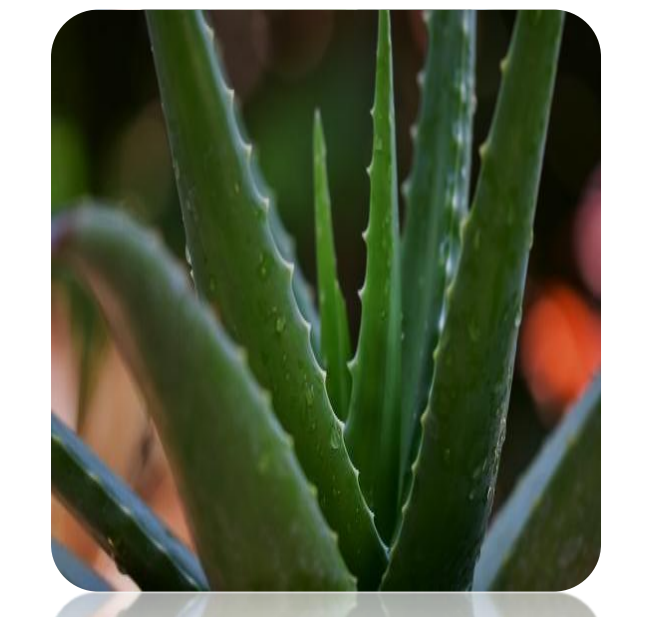

एलोवेरा की खेती के लिए उपयोगी मिट्टी:–

एलोवेरा की खेती किसी भी प्रकार की उपजाऊ मिट्टी में की जा सकती है परंतु रेतीली मिट्टी इसके लिए सबसे अच्छी होती है। इसके अलावा अच्छी काली मिट्टी में भी इसकी खेती की जा सकती है। जलभराव वाले मिट्टी में इसकी खेती करने से किसानों

अमन दीक्षित एवं रुपेश कश्यप

चंद्र भानु गुप्त कृषि महाविद्यालय बक्शी का तालाब लखनऊ

को बचना चाहिए। इसकी मिट्टी का पीएच मान 8.5 से अधिक नहीं होना चाहिए।

ऐसे करें एलोवेरा की खेती की तैयारी :–

- ❖ एलोवेरा की खेती करने से पहले आपको सही जगह और मिट्टी का चुनाव करना होगा ताकि आप की फसल अच्छी हो।
- ❖ सबसे पहले आप अपने खेत की दो से तीन बार जुताई कर ले और अपनी भूमि को संकल्प कर ले। एलोवेरा की खेती के लिए एक संकल्प भूमि का होना बहुत जरूरी है क्योंकि यह एक पौधा 3 से 5 साल तक लगातार आपको फसल देता रहेगा।
- ❖ अगर आप अपनी भूमि को और उपजाऊ बनाना चाहते हैं तो आप उसमें यूरिया भी डाल सकते हैं। यूरिया एक तरह का फर्टिलाइजर होता है, आपको एक हेक्टेयर के खेत के लिए लगभग 100 किलोग्राम यूरिया का इस्तेमाल करना होगा।
- ❖ एक बार आप की भूमि एलोवेरा की खेती के लिए उपजाऊ हो जाए तब आप को ऊंची क्यारियां बनाकर उसमें एलोवेरा के बेबी प्लांट 2 मीटर की दूरी पर लगाने होंगे। हर क्यारी के बीच में 2 मीटर की दूरी होनी चाहिए।
- ❖ एलोवेरा की पहली फसल 9–11 महीने में तैयार हो जाती है आप इस फसल के ऊपर के पत्ते काट सकते हैं। आपको यह फसल जड़ से नहीं काटनी होती है क्योंकि यही फिर से उगती है।
- ❖ किसान सरकारी उद्यानिकी विभाग या अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र या कृषि कॉलेज या कई तरह के संस्था जैसे **एचसीएल फाउंडेशन, पानी संस्थान** इत्यादि जो कि कृषि से संबंधित कार्य कर रहे हैं वहां से इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एलोवेरा की उन्नत किस्में :–

एलोवेरा की व्यवसायिक खेती के लिए सदैव हाइब्रिड किस्मों का ही चुनाव करना चाहिए, क्योंकि हाइब्रिड किस्म से पल्प अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। भारत में अब एलोवेरा की कई उन्नत किस्में विकसित हो चुकी हैं जैसे आई.सी –111271, आई.सी–111280, आई.सी–111269 इन किस्मों में पाई जाने वाली एलोडिन की मात्रा 20 से 30 पर्सेंट तक होती है।

सिंचाई और उर्वरक प्रबंधन :–

एलोवेरा की खेती में बहुत अधिक सिंचाई की जरूरत नहीं होती है। फिर भी मिट्टी में सदैव नमी होनी चाहिए। एलोवेरा में आप 10 से 15 दिनों में सिंचाई कर सकते हैं। एलोवेरा की अच्छी उपज के लिए खेत को तैयार करते समय 10 से 15 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करना चाहिए। इससे उत्पादन में गुणात्मक रूप से वृद्धि होती है। गोबर की खाद का इस्तेमाल करने से पौधों की बढ़वार तेजी से होती है और किसान 1 वर्ष में 1 से अधिक कटाई कर सकता है।

एलोवेरा में रोग एवं कीट प्रबंधन कैसे करें :–

पौधों को नुकसान से बचाने के लिए कीट नियंत्रण भी बहुत आवश्यक कदम है। एलोवेरा की फसल के लिए मैली बग एक बड़ा खतरा है और बीमारियों की बात की जाए तो पत्तियों पर दाग पड़ना एक खतरा है। इसके लिए 0.1 पेराथियान या 0.25

मेलाथियान के जलीय घोल का उचित छिड़काव करते रहना चाहिए।

एलोवेरा की खेती के लिए मार्केटिंग और लागत व कमाई :–

एलोवेरा की खेती में किसानों के लिए अपार संभावनाएं हैं। इसे बेचने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती है। कई ऐसी कंपनियां हैं जो एलोवेरा की खेती के लिए किसानों से संपर्क करती हैं। यह कंपनियां पौधे उपलब्ध करवाने के बाद खेत पहुंचकर उपज की खरीदी भी करती हैं। यह कंपनियां किसानों को एलोवेरा के लिए मार्केट उपलब्ध करवा रही हैं।

किसान चाहे तो सीधे आयुर्वेद या अन्य हर्बल प्रोडक्ट बनाने वाली अन्य कंपनियों को भी चुन सकते हैं। इसे आयुर्वेदिक दवाइयां बनाने वाली कंपनियां तथा प्रसाधन सामग्री निर्माताओं को बेचा जा सकता है।

एलोवेरा की खेती में लागत की बात करें तो लागत रू 50,000 प्रति हेक्टेयर से शुरू होती है और क्षेत्रफल के हिसाब से बढ़ती जाती है। इसकी मोटी पत्तियों की देश की विभिन्न मंडियों में कीमत लगभग रू 15000 से `रू 25000 प्रति टन होती है। जिससे किसान मोटी कमाई कर सकता ळें